Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-13, Issue-2, September-2019
Impact Factor:4.081
www.researchguru.net

दलित वीरांगना झलकारी बाई

सुरतनभाई मानसिंगभाई वसावा
पीएच.डी., शोधार्थी, हिंदी विभाग गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद
E-mail : Surtan.vasava83@gmail.com Mo. 9712242484

सारांश :-

मोहनदास नैमिशराय ने अपना उपन्यास दलित वीरांगना झलकारी बाई के माध्यम से 1857 के संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई के साथ अंग्रेजों के सामने लड़नेवाली दलित वीरांगना झलकारी बाई का चित्रण समाज के समाने लाने का प्रयास किया है। झलकारी बाई 1857 में अंग्रेजों के सामने अपनी जान लगाने वाली एक दलित वीरांगना थी पर उस समय के साहित्यकार एवं पत्रकारों ने झलकारी पर कोई साहित्य नहीं लिखा क्योंकि एक दलित वीरांगना होने के नाते समाज में लाने का प्रयास नहीं किया था। पर उपन्यासकार नैमिशराय जी ने अपनी रचना में इस क्षेत्र में जाकर कुछेक साहित्य एकत्रित किया और झलकारी बाई का चित्रण किया है। सचमूच 1857 के संग्राम में अंग्रेजों को मात देने वाली उस वीरांगना ने अपनी वीरता, साहस एवं हिम्मत समाज के आज आँख खोल देंगी कि एक दलित वीरांगना ने अपने देश की आज़ादी के लिए इतना सब कुछ किया था और समाज ने आज उसे अनदेखा करके रखा है।

शब्द कुंजी :- *मोहनदास नैमिशराय का जीवन परिचय, झलकारी बाई वीरता साहस धैर्य, निडरता का प्रभाव, उच्च जाति के लोगों का शोषण का सामना, 1857 के ऐतिहासिक संग्राम में झलकारी बाई का साहस का उल्लेख किया गया है।*

प्रस्तावना :-

दलित वीरांगना झलकारी बाई उपन्यास के रचनाकार मोहनदास नैमिशराय का जन्म 5 सितबंर, 1949 में मेरठ (उत्तरप्रदेश) में हुआ था। उपन्यासकार नैमिशराय जी ने दलित साहित्य और दलित समाज की दर्दनाक रुदन को पछड़े समाज की स्थिति को अपनी लेखनी के माध्यम से समाज के सामने लाने का प्रयास किया है। लेखक ने झलकारी बाई उपन्यास में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास 1857 में अंग्रेजो के सामने लड़ने वाली वीरांगना झलकारी का महत्वपूर्ण चित्रण अपनी लेखनी द्वारा किया चित्रित किया है। लेखक ने अपनी रचना में 1857 के संग्राम में लड़े उन स्वतंत्रता सेनानियों का चित्रण किया है, जो इतिहास में आज भूले-बिसरे हैं। आज बहबुत कम लोग वीरांगना झलकारी बाई को जानते होंगे कि झलकारी बाई रानी लक्ष्मीबाई की प्रिय सहेलियों में से एक थी एवं झलकारी बाई ने सिर्फ रानी लक्ष्मीबाई का साथ न दिया बल्कि समर्पित रूप से झाँसी की रक्षा में अंग्रेजों का सामना भी किया है। पर आज इतिहास के पन्नों में उनका उल्लेख कम किया गया है क्योंकि एक दलित समाज की होने के कारण किसी पत्रकार या रचनाकार ने दलित समाज की वीरांगना झलकारी बाई की खबर नहीं ली थी।

झलकारी बाई का जन्म झाँसी से चार कोस दूर भोजला गाँव में एक साधारण परिवार में हुआ था। उनका रिश्ता एक गरीब परिवार से था। झलकारी को बचपन से ही मिट्टी एवं रेत से खेलने का शौक था। वह कई घंटों तक मिट्टी के किले बनाते हुए बैठती थी और उन किले से किसी को हाथ तक न लगाने देती थी। भोजला गाँव में बहुत कुछ रचा - बसा था। गाँव में स्कूल न था पर मंदिर अवश्य था। धर्म में प्रयोग और विश्लेषण की नवीन प्रक्रिया आरंभ को चुका था। धर्म ही शिक्षा और शिक्षा ही धर्म था। झलकारी बाई की बाल सखा चन्ना एवं रमची थी। झलकारी बाई के साथ मिट्टी के किले के साथ खेलने वाली दोनों सहेलियाँ थी। झलकारी बाई बचपन से ही इतनी शूरवीर थी की मिट्टी के बने किले की रक्षा के लिए अपनी जान लगा देती थी।

झलकारी बाई की रग - रग में वीरता और बहादुरी का खून दौड़ रहा था हा, इनका उदाहरण द्रष्टव्य है : एक दिन झलकारी बाई और उनकी सहेलियाँ जंगल में जलावन लेने गई थीं। कुछ लकड़ियाँ उन्होंने इकट्ठी कर ली थीं और और अधिक जलावन लेने के लिए बराबर आगे बढ़ रहे थे। झलकारी बाई के हाथ में कुल्हाड़ी थी और उनकी सहेलियों के हाथ में बाँस थे और उसी जंगल में बाघ रहता था और झलकारी लकड़ियाँ काटते काटते थक -सी गई थी और थोड़ी घड़ी भर सुस्ताने के लिए जमीन पर बैठी थी कि नजदीक की झाड़ी से घात लगाकर बाघ ने उस पर हमला किया। बाघ के उछलने से परिवेश में खड़खड़ाहट की आवाज हुई तो झलकारी चौंकी। उसने पलटकर देखा तो जंगली जानवर ने उस पर छलाँग लगा दी थी। ऐसे समय में वह जरा भी नहीं घबराई। बिजली की गति से वह उठी और हाथ में पकड़ी कुल्हाड़ी उसके आगे कर दी। आँधी की तरह झपटे बाघ को गुमान न था और न ही गुमान और न इतनी समझ। उसने तो अपने सामने शिकार देखा था। कुल्हाड़ी वह देख नही पाया। वही जंगल का राजा धोखा खा गया। से मालूम नहीं था कि उसका पाला गाँव की एक बहादुर लड़की से पड़ सकता है। बाघ का मुँह खुला था उसके लम्बे नुकीले दाँत झलकारी को दबोचने के लिए तत्पर थे जो संभव न हुआ। तत्पर में ही कुल्हाड़ी बाघ के हलक तक जा पहुँची। जंगल में दूर - दूर तक आबाज गूँज गई थी। और झलकारी ने बाघ के माथे पर कुल्हाड़ी से वार किया और बाघ का माथा फट गया। उसी प्रकार झलकारी बाई के रग - रग में वीरता का खून दौड़ रहा था। इसी प्रकार एक दलित समाज की लड़की का वीरता का जौश उभर कर सामने आया।

उसकी वीरता के बारे में सुनकर भिक्कु ने पूछा था, "तुम्हारा नाम क्या है बेटी ?"

थोड़ा शर्माते हुए जवाब दिया था उसने, "झलकारी।"

इस बार पहला भिक्खु बोला था, "नही, तुम्हारी बेटी चेतन है, हिम्मतवारी है।" उसी प्रकार बचपन में ही झलकारी बाई ने वीरता का नाम कमा लिया था।

झलकारी बाई परिवार की इज्जत थी, स्मिता और आभूषण थी। जिस दिन झलकारी बाई ने झाँसी की जमीन पर पैर रखा था उसी समय से उनके मन में भी रानी को देखने तथा उनसे मिलने की बड़ी साध थी। रानी लक्ष्मीबाई के रूप और स्वभाव के अलग - अलग रंग थे, अलग - अलग छटा थीं। औरतें रस ले - लेकर रानी के बारे में कहती सुनती थीं। सखी - सहेलियाँ रानी का नाम लेकर परस्पर हास्य - विनोद करती थीं और उसके लिए रानी हँसी - मजाक का विषय बन गया था पर झलकारी बाई के लिए रानी एक प्रेरणा रूप स्रोत बन गयी थीं। उसके भीतर देशभक्ति का दीपक कभी का जल चुका था। झलकारी बाई रानी तो नहीं थीं पर आस -पड़ोस में परिवार की इज्जत की अस्मिता और आभूषण थी।

अन्ततः नवम्बर, 1853 को राजा गंगाधर राव का देहान्त हो गया। झाँसी में यह विपदा की शुरूआत थी, पर पराधीनता से स्वाधीनता के विचार का उभरना भी यहीं से आरंभ हुआ था। जिस दिन राजा की मृत्यु हुई उस दिन रानी की उम्र 18 वर्ष की थी। 1857 की स्वतंत्रता संग्राम की परिस्थितियों का निर्माण किया उसमें अकेली रानी लक्ष्मीबाई ही नहीं थी वीरांगना झलकारी बाई भी थी। सूत कातते हुए उसने क्रांति की लड़ियों की बुनावट कर डाली थी। ऐसी बुनावट, जिसमें अंग्रेज भी उलझ कर रह गए थे। तभी तो क्रांतिकारियों को पूरी तरह से वे बेदखल नहीं कर पाए थे।

झलकारी बचपन से ही वीर और साहसी स्वभाव की थी। उसमें उत्साह तथा तत्परता जैसे गुणों का समावेश था। वह ईमानदार एवं मेहनती थी। उसके मन में आरंभ से ही सैनिक बनने की लगन थी। सैनिकों को वर्दी में देख तथा युद्ध का डंका बजते हुए सुनकर उसकी भुजाएँ भी रण क्षेत्र में जाने को फड़कने लगती थीं। जब कभी उसके आसपास लतवारें चलने तथा गोला फूटने की गूँज होती, तो जैसे उसके कानों में कोई कहता कि, "झलकारी तुझे भी सैनिक बनना है। तुझे देश सेवा करनी है। तुझे अंग्रेजों को अपनी धरती से भगाना है।" तो ऐसे समय में उसके मन में देश प्रेम की ज्वाला धधकने लगती. जो से बेचैन कर देती थी। ऐसी विवश परिस्थितियों में दलित समाज के लोग साहसी थे और बहादुर थे, लेकिन उनकी अपनी पहचान बने, ऐसा सवर्ण समाज नहीं चाहता था। उत्तरी भारत में उनके लिए पग - पग पर अड़चनें थीं।वर्ण - व्यवस्था की दस्तक थी। जिसमें भारतीय समाज को अनेक धाराओं में बाँट रखा था। रुचि, विचार तथा परंपराओं के साथ रूढ़ियों के दलदल में वहीं विराट संस्कृति वाला समाज उसमें फँसा था। वे परंपराएँ एक जाति को ऊर्जा देती थीं तो दूसरी जाति की अस्मिता पर वार करना नहीं चूकती थीं। ऐसी बयानक धर्म मीमांसा थीं। ऐसी विषम परिस्तितियों में कोरी समाज की एक महिला ने देश एवं समाज की आन - बान के लिए सैनिक बनने का साहस किया था। कितना अपूर्व साहस था झलकारी बाई का, पर क्या उसके साहस की प्रशंसा समाज ने न की, उसका मान बढ़ाते हुए अच्छी नजरों से नही देखा क्योंकि जब झलकारी बाई ने घर पर सास से सैनिक बनने की बात कही तो उसे यही जवाब मिला था कि समाज के लोग क्या कहेंगे ? पर सास ने कहा तुम्हें हमारा आशीर्वाद है। पर इस समाज का भी ध्यान रखना, जिनसे हमारी जगह पहले से ही निश्चित की हुई है कि वे लोग तुम्हें सैनिक के रूप में स्वीकार कर सकेंगे। स्वयं कोरी समाज के बड़े - बूढ़ो को झलकारी बाई का स्वतंत्रता से आना - जाना पसंद न था और नीम की छाँव या चबूतरे पर बैठकर नहीं तो फिर चलते - फिरते लोग झलकारी बाई के बारें में चर्चा करते थे कि - कोई कहता, "कछु सुना भइया पूरन अपनी घरवाली को पैल्वान बना रओ। वो मलखंब सिखाउत।"

दूसरा जवाब में बोलता है, "य्यै तो परमपरा के विरोध की बात है भई।"

तीसरा भी चुप न रहता वह तत्काल कह उठता, "पुरखन लौ जा रीत कबऊ न रई। दुलइयन कौ काम घर चलाबौ है।"

चौथा नमक मिर्च लगाने में पीछे न रहता, "यह बहू तो म्हारी नाक कटवाने पै ठाड़ी भई है।" उसी प्रकार दलित समाज की महिला को उस समय में भी अनेक यातनाएँ या समाज की खरी खोटी सुननी पड़ती थी।

झलकारी बाई साहसी और निड़र होने के साथ - साथ निशानेबाज भी थीं। उन्होंने कई लोगों के मुँह से सुना था कि इसी जंगल में कोई भेड़िया आकर नाले के भरके में छुपा है जो बछड़े, बछिया के साथ भेड़ तथा बकरी मारकर खा जाता है और सभी लोग डरते डरते रास्ता पार करते थे। किसी के जानवर को भेड़िया चट कर गया तो किसी को घायल। घने जंगल में सुननेवाला कौन था। झलकारी बाई सोचती थी आखिर गरीब लोगों के दुख- दर्द को सुननेवाला कौन है ? झलकारी बाई का मन कहता था कि वह उस भेड़िए को वहाँ जाकर खुद मारे। उसी प्रकार जलकारी बाई का साहसी स्वरूप देखने को मिलता है।

अंग्रेजों की आँखें झाँसी पर लगी थी तब और युद्ध क्षेत्र में उतरना था। तब रानी की बात से उसे ताकत मिली और अपने भीतर उत्साह का अहसास भी हुआ और उनके स्वर में तेजी आ गई थी जैसे कि - "कैसी बातें करो हो रानी साहिबा। जा तुमाय पसीना गिरे वा हमाय लहू बहा दैं।" हाँ बहिना, ठीक कओ ? और आसपास सभी सखियाँ साथ मैं बोल उठीं, "हम सब तैयार हैं। सुनकर खुश होते हुए रानी ने कहा था, शाबास झलकारी, तुमने तो रग - रग में खून दौड़ा दिया।" उसी प्रकार झलकारी बाई ने झाँसी की लड़ाई में रानी का साथ दिया था और रानी का मान बढ़ाया था। झलकारी बाई जिम्मेदारी के पालन करने में अपनी जान तक लगा देती थी। रानी ने जो जिम्मेदारी सौंपी थी उसे पूरा करने में वह जी जान से जुटी थी। रानी ने झलकारी बाई को लुगाइयन की फौज की कमांडर फिर से बना

दिया था। झाँसी में यह एक नया प्रयोग था और महत्वपूर्ण भी। महिलाओं की इस फौज में की कमांडर दलित समाज की एक महिला को बनाना उस समाज के लिए यह प्रेरणा की बात थी। झलकारी बाई ने युद्ध में हमला और बचाव दोनों तरह का प्रशिक्षण तेजी से लेना शुरू कर दिया था। बन्दूक चलाने का अभ्यास तो वह कई माह से कर रही थी। उसी प्रकार नियम पालन एवं जिम्मेदारी का पालन करना झलकारी बाई का एक उत्कृष्ट नियम था।

1857 का आकाश तेजी से सुर्ख खून के रंग में बदलता जा रहा था। छुटपुट घटनाएँ होने लगी थीं। विद्रोह कभी फूट चुका था। झाँसी में भी इसका प्रभाव था। अंग्रेजों के खेमे में खलबली थी और घबराहट भी। क्रांति के इन समर्पित यौद्धाओं ने ब्रिटिश सेना से जूझने का मन बना लिया था। 10 मई, 1857 को मेरठ छावनी में भारतीय सैनिकों ने जो विद्रोह की शुरूआत की थी उसकी चिनगारी झाँसी में भी पहुँची। झाँसी की बागडोर महारानी लक्ष्मीबाई के हाथ में आ गई। झलकारी के मन में आया कि वह रानी से अपने दिल की बात कहे। उसने रानी से कहा कि, "आज मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो गई परंतु साध रह गई।"

रानी बोली, "प्रतिज्ञा कैसी और साध क्या ?"

झलकारी ने जवाब में कहा, "मार्च माह उन्नीसौ चौवन को झाँसी अंगरेजों ने हथियाय लया था। उस दिन मैंने प्रतिज्ञा में अपने जेवर उतार दए थे। आज पहनने का मन हय।"

उसी प्रकार झलकारी बाई प्रतिज्ञा का पूरी निष्ठा से पालन करने वाली एक निष्ठावान आदर्श वीरांगना के रूप में नजर आती है। 6 जून, 1857 को झाँसी का किला घेर लिया गया। झाँसी में 5 जून से 8 जून तक कोरी भाऊ बक्शी का झंडा लहराता रहा। झलकारी बाई रानी लक्ष्मीबाई के बारे में चिन्तित थी कि कहीं रानी अंग्रेजों के हाथ न लग जाएँ और ब्रिटिश सेना अपनी विजय पताका फहरा दें। ऐसी नाजुक स्थिति में झलकारी बाई ने बड़ी सूझ - बूझ से रानी को सुरक्षित स्थान पर जाने की इच्छा प्रकट की। झाँसी की सड़को पर खून ही खून बह रहा था। लोग मर - कट रहे थे। तलवारें टकराने और गोलियाँ छूटने की आवाजें आ रही थीं। समूचा झाँची युद्ध क्षेत्र बन गया था। चप्पे - चप्पे पर मारकाट हो रही थी। नदी, नाले, सड़कें, किले की दीवारें, महल के बुर्ज, दरवाजें, खिड़कियाँ सभी जगह खून से लाल होने लगी थीं। परवाह थी बस झाँसी के मान - सम्मान की। दूसरी और झलकारी को चिन्ता थी रानी के मान सम्मान की। उनकी निगाह में रानी और झाँसी में कोई फर्क नहीं था। झाँसी और रानी एवं रानी एवं झाँसी उसके लिए एक ही था। रानी पकड़ी गई तो बुन्देलखंड की नाक कट जाएगी। उसी प्रकार झलकारी बाई रानी को बचाने के लिए अंग्रेजों की छावनी में गई। छावनी के गौरे सैनिक शान्त थे, पर उनकी बन्दूकें और तलवारें झलकारी की ओर ही लगी थीं। स्वयं झलकारी के हाथ में नंगी तलवार थी। उसी प्रकार झलकारी बाई ने रानी को और झाँसी को बचाने के लिए अपनी जान की बाजी तक लगा दी थी।

उपन्यासकार ने वीरांगना झलकारी बाई में 1857 के ऐतिहासिक संग्राम को प्रस्तुत किया है। इतिहास में सभी समाज के नायकों की परंपरा रही है। बहुजन समाज में जन्मे सभी नायक तथा महापुरुषों ने अपना - अपना योगदान दिया है लेकिन इतिहास के पन्नों पर सुवर्ण अक्षरों से सिर्फ उच्चवर्णीय नायकों का ही नाम लिखा है। 1857 में रानी लक्ष्मीबाई के साथ झलकारी बाई की अपनी वीरता को दर्शकों के सामने नैमिशराय ने रखा है। झलकारी का इतिहास पढ़कर दर्शक भी सोचने के लिए मजबूर होते हैं। अत: उसी प्रकार नायिका झलकारी बाई ने एक दलित एवं निम्न वर्ग की होते हुए भी रानी एवं झाँसी की रक्षा के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी थी और इतिहास के पन्नों पर दलित समाज की नायिका ने अपना नाम चित्रित कर दिया है और समाज में झलकारी बाई ने अंग्रेजों के सामने अपनी जान की बाजी लगा दी थी।

संदर्भ सूची

1. नैमिशराय, मोहनदास, वीरांगना झलकारी बाई, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली, पृ. सं. 21 - 22
2. वही, पृ. सं. 27
3. वही, पृ. सं. 45
4. वही, पृ. सं. 44
5. वही, पृ. सं. 63
6. वही, पृ. सं. 64
7. वही, पृ. सं. 82
8. वही, पृ. सं. 90
9. वही, पृ. सं. 96